International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

कमज़ोर वर्ग के शोषण की विभीषिका - "ठाकुर का कुआँ"

कुमारी ममता सिंह

शोध छात्रा, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

हिन्दी कहानियों के विकास के इतिहास में प्रेमचंद का आगमन एक महत्पूर्ण घटना है. उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज का पूरा परिवेश उसकी कुरूपता, असमानता, छुआछूत, शोषण की विभीषिका, कमज़ोर वर्ग और स्त्रियों का दमन जैसे कुरीतियों को व्यक्त किया है. उन्होंने सामान्य आदमी का जीवन बहुत ही नज़दीक से देखा था खुद उस जीवन को भोगा भी था. यही वजह है कि उनकी कहानियाँ यर्थात से जुड़ी होती थी. प्रेमचंद ने 'ठाकुर का कुआँ' कहानी के माध्यम से हमारे समाज में व्याप्त जातिप्रथा की सबसे घृणित परंपरा छुआछूत के कारण तिरस्कार, अपमान और मानवीय अधिकारों से वंचित जीवन जी रहे अछूतों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बयां किया है. 'ठाकुर का कुआँ' स्वच्छ पानी के लिए तरसते अछूत जीनव की वास्तविक कहानी है.

बीजक शब्द- जाति-प्रथा और छुआछूत, दलित अस्मिता का आंदोलन, स्त्री के जातिगत शोषण का चित्रण

प्रस्तावना-

प्रेमचंद की कहानियों के बारे में राजेंद्र यादव ने लिखा है, 'वेश्या, अछूत, किसान, मजदूर, जमींदार, सरकारी अफसर, अध्यापक, नेता, क्लर्क समाज के प्राय: हर वर्ग पर प्रेमचंद ने कहानियाँ लिखी हैं और राष्ट्रीय चेतना के अन्तर्गत विशेष उत्साह और आदर्शवादी आवेश से लिखी है | मगर मूलत: उनकी समस्या तत्कालीन दृष्टी से वांछनीय- अवांछनीय, शुभ- अशुभ के चुनाव की है| परिणति वांछनीय और शुभ की ओर उन्मुख होने की है |वह समस्या और उसका हल साथ ही देते है'|

सन् 1936 में लखनऊ में आयोजित प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन में दिए गए अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रेमचंद ने कहा था "साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है-उसका दरजा इतना न गिराइए |वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं , बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है" |

"हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो,जीवन की सच्चाई का प्रकाश हो जो हममे गति, संघर्ष, और बेचैनी पैदा

करे, सुलाए नहीं,क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है"| प्रेमचंद साहित्य को उद्येश्य परक मानते थे और अपने साहित्य द्वारा ऐसा करके उन्होंने दिखा दिया प्रेमचंद के पहले हिन्दी कथा- साहित्य जिस रोमानी ऐयारी और तिलिस्मी प्रभाव में लिखा जा रहा था, उससे उन्होंने मुक्त किया और उसे यर्थाथ की ठोस ज़मीन पर उतारा | प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में समाज की सामाजिक-आर्थिक विसंगतियों को तो उजागर किया ही,शायद पहली बार शोषित,दलित एंव गरीब वर्ग को नायकत्व प्रदान किया प्रेमचंद ने 'ठाकुर का कुआँ' कहानी के माध्यम से अछूतों की कठिनाइयों का और उच्च जातियों द्वारा उन पर किए जाने वाले अत्यचार का खुलकर वर्णन किया है | प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त जातिप्रथा की सबसे घृणित परंपरा छुआछूत के कारण तिरस्कार,अपमान और मानवीय अधिकारों से वंचित जीवन जी रहे अछूतों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को अभिव्यक्त किया है | 'ठाकुर का कुआँ' स्वच्छ पानी के लिए तरसते अछूत जीवन की ऐसी कहानी है जो यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि क्या अछूतों को हमारे समाज में स्वच्छ पानी पीने का भी अधिकार नहीं है | ठाकुर का कुआँ कहानी में चित्रित घटना मात्र एक घटना नहीं है बल्कि दलित जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्त करती है. त्रासदी यह है कि अछूतों को ठाकुर या साहू के कूएँ से पानी भरने का भी अधिकार नहीं है| कहानी पानी की समस्या को लेकर गहन चिंता में डूबे अछूत पति-पत्नी, जोखू और गंगी को लेकर शुरू होती है। जोखू और गंगी के अछूत होने के कारण ही पानी की समस्या से वे जूझ रहे है। 'जोखू ने लोटा मुंह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आयी।' "जोखू बोला - यह कैसा पानी है मारे बास के पिया नहीं जाता।" लम्बे समय से बीमार जोखू प्यास के मारे तड़प रहा था। गंगी प्रतिदिन शाम को पानी भर लिया करती थी। कुआं दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लायी तो उसमें बू बिल्कुल न थी, आज पानी में बदबू कैसी! लोटा नाक से लगाया तो सचमुच बदबू थी। ज़रूर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा।' गंगी के सामने पानी की समस्या जैसे मुंह फाड़े खड़ी हो गई। वह अन्य गरीब सवर्ण महिलाओं जैसी सवर्णों के कुएँ से पानी नहीं भर सकती। अछूतों को सवर्णों के कुएँ पर चढ़ने का अधिकार ही नहीं था। मगर सवाल यह है कि दूसरा पानी आवे कहां से? अछूत जहां से पानी भरते है उस गड्ढे में किसी जानवर के मर जाने से पानी दूषित हो गया है और उससे बदबू आ रही है| जोखू बीमार है मारे प्यास से उसकी जान जा रही है| जो पानी गंगी एक दिन पहले भर कर लाई थी वह पीने के लायक नहीं है| लेकिन गंगी और जोखू करे तो क्या करे दूसरा पानी भी नहीं|पानी के स्रोत ऊँची जातियों के अधिकार में होने और अछूतों के साथ अस्पृश्यता का व्यवहार बरता जाने के कारण अछूत, ठाकुर-राजपूत या साहू के कुओं से पानी नहीं ले सकते। जोखू के शब्दों में अछूतों की वास्तविक स्थिति को प्रेमचंद अभिव्यक्त करते है : 'ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएँगे। 'साहू का कुआँ गाँव के उस सिरे पर है, परन्तु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा? और कोई कुआं गाँव में है नहीं।' जोखू के इस बयान से यह साफ पता चलता है कि अछूतों की आर्थिक दशा ऐसी नहीं कि वे अपने लिए कुआं खुदवा सके, मजबूरन सवर्णों के आगे पानी के लिए गिडगिड़ाने के सिवाए उनके पास कोई अन्य विकल्प नहीं है। पानी जो मानव जीवन की नितांत जरूरत है, जिसके लिए एक इन्सान को बेबस होना पड़े, और मनुस्मृति के विधानों का पालन करने में सवर्ण समाज आज भी लज्जा महसूस न करें, अमानवीय अत्याचार करके जाति अंह की तुष्टि करें, यह शायद संपूर्ण संसार में धार्मिक कट्टरता का एक अकेला उदाहरण है।

गंगी इतना तो जानती थी कि खराब पानी पीने से बीमारी बढ़ जायेगी लेकिन अशिक्षा के कारण यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है। बोली 'यह पानी कैसे पियोगे? न जाने कौन जानवर मरा है। कुएँ से मैं साफ पानी लाये देती हूँ।' जोखू बहुत आश्चर्य में पड़ गया, 'लेकिन दूसरा पानी कहां से आएगा' गंगी कहती है "दो दो कुएँ हैं, एक लोटा पानी न भरने देंगे। जोखू ने उस सामान्य यथार्थ की ओर संकेत किया जिस पर सबसे पहले प्रेमचंद की नजर पड़ी थी हाथ पांव तुड़वा आयेगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से।' ऐसा क्यों होगा? क्योंकि 'ब्राह्मण देवता आशिर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे और साहुजी एक के पांच करने में लगे रहेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है? दर्द छोड़ें यहाँ तो मर भी जाए तो दुआर पर कोई झांकने तक नहीं आता। कंधा देना तो बड़ी बात है। जोखू के इस कथन में सदियों की पीड़ा की अभिव्यक्ति है। वह यह तो नहीं समझ पा रहा कि ऊँची जातियाँ अछूतों के प्रति इस हद तक असंवेदनशील क्यों हैं, उनके दुख में शामिल होने, उनकी गरीबी को हटाने या उनकी मृत्यु पर भी कोई क्यों नहीं साथ आता? प्रेमचंद ने जोखू व गंगी के द्वारा इन प्रश्नों को पहली बार रचना के माध्यम से उठाकर अछूत जीवन की वास्तविकता से परिचित कराया है।

गंगी यह खराब पानी पीने के लिए जोखू को मना करती है क्योंकि उसकी तबीयत और खराब हो जायेगी| और ठाकुर के कुएँ से पानी भरने का ठानकर घड़ा और रस्सी लेकर रात के अंधेरे में निकलती है वह कुएँ से पानी खींच भी लेती है तभी ठाकुर के घर का दरवाज़ा खुलने और कौन है कौन है कि आवाज़ सुनकर वह रस्सी और घड़ा छोड़कर अपनी जान बचा कर वहाँ से भाग जाती है|जातिप्रथा और छुआछूत के कारण अछूत कैसी दुर्दशा का शिकार है कि उसे अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिए सवर्णों की दया पर निर्भर करना पड़ता है| ठाकुर का कुआँ कहानी से यह साफ उजागर होता है कि जाति-प्रथा कैसी अमानवीय धार्मिक अवधारणा है. जो कि मानव-मानव के बीच इस कदर असमानता व भेदबाव का विषैला बीज बोती है जिसके कारण आजतक जाति-व्यवस्था न केवल कायम है बल्कि छुआछूत के कारण देश की आबादी की एक चौथाई से ज़्यादा जनसंख्या अपनी ही भूमि पर बहिष्कृत की तरह जीवन जीने के लिए बाध्य है|अछूतों को संपत्ति अर्जित करने और संपत्ति संग्रह का अधिकार नहीं है|यह स्पष्ट करने के लिए जंगल ,जमीन पर किसी प्रकार के अधिकार से उसे वंचित किया | ये प्रकृतिक संसाधन केवल जीवन की आवश्यकता ही नहीं है बल्कि इसके एकाधिकार द्वारा संपत्ति और सत्ता भी हासिल होती है|धर्मग्रंथ यह भी कहते है कि पिछले जन्म में किए गये बुरे कर्मों के कारण इस जन्म में व्यक्ति अछूत के रूप में जन्म लेता है| इसलिए पूर्वजन्म के फलस्वरूप अब अछूत को इस जन्म में तीनों उच्चवर्गों की सेवा करना और बदले में उत्पीड़न,शोषण,अभाव अपमान और तिरस्कार झेलना पड़े तो इसे अपना भाग्य समझना चाहिए अछूतों के प्रति सवर्ण समुदाय किस कदर अमानुषिक और असंवेदनशीनल है इसकी हजारों हजार घटनाएँ हमारे इतिहास के पन्नों पर बिखरी पड़ी हैं।मूलभूत अधिकारों से वंचित अछूत समाज हजारों सालों से बहिष्कृतों का जीवन जी रहा है।पानी और अन्न के लिए वह हमेशा सवर्ण समाज पर निर्भर रहा क्योंकि उत्पादन के साधनों पर सवर्णों की सत्ता रही। जिस सवर्ण समुदाय की सत्ता में उत्पादन प्रणाली और प्राकृतिक संसाधन रहे है, उन्हीं के अधीन रहकर ही अछूतों को जीना पड़ रहा है। दलित जीवन की वास्तविकता को कलमबद्ध करके इस गंभीर प्रश्न के प्रति सर्वप्रथम ध्यान आकर्षित करने का काम प्रेमचंद ने किया है।प्रेमचंद हिंदी के प्रगतिशील लेखक संघ के एक सम्मानित सदस्य थे और प्रगतिशील

विचारधारा से विकसित चेतना दृष्टि से उन्होंने दलितों के साथ हो रहे अन्याय को रचनात्मक अभिव्यक्ति दी है। प्रेमचंद जब.ठाकुर का कुआं की रचना कर रहे थे तब डॉ.आंबेडकर ने दलित अस्मिता के लिए दलित मुक्ति संघर्ष छेड़ा था। जातिभेद के कारण दलितों के सदियों से हो रहे शोषण और अपमान के विरोध में उन्होंने सामाजिक आंदोलन का सूत्रपात किया। महाराष्ट्र के महाड गाँव में 1927 में चवदार तालाब पर मानव अधिकारों को प्राप्त करने के लिए अभिजात्य सनातनी वर्ग के विरोध में पहला ऐतिहासिक संघर्ष छेड़कर दलितों में चेतना जगाकर उनमें अपने अधिकारों के प्रति अहसास जगाया। हजारों की संख्या में अछूतों ने डॉ. आंबेडकर के नेतृत्व में नासिक के कालाराम मंदिर प्रवेश का सत्याग्रह किया। निश्चित तौर पर तो नहीं,लेकिन इस आंदोलन के प्रभाव से प्रेमचंद के दृष्टिकोण में जरूर परिवर्तन आया दिखाई देता है।जिसे हम उनकी दलित जीवन संबंधी कहानियों में आई नयी चेतना के रूप में देख सकते हैं। सन् 1937 में 'सद्गति', 1932 में 'ठाकुर का कुआं' और 1934 में 'दूध का दाम' जैसी कहानियाँ लिखकर प्रेमचंद ने इसका प्रमाण दिया।राष्ट्रीय आंदोलन उस समय अपने पूर्ण जोर पर था। उपनिवेशवाद के खिलाफ महात्मा गांधी और अन्य नेतागण अंग्रेजों को टक्कर दे रहे थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक तरफ महात्मा फुले,आंबेडकर और पेरियार वर्णाश्रम धर्म,जातिप्रथा के निर्मूलन, ब्राह्मणवाद के अंत के लिए लड़ रहे थे, तो दूसरी ओर नेहरू, गांधी, पटेल, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, मदन मोहन मालवीय और लोकमान्य तिलक जैसे नेता ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ रहे थे।भारत जिस भौगोलिक क्षेत्र में है, उस क्षेत्र में मानव की ३ या ४ प्रजातियाँ ही पाई जाती थीं। उनके विकास की प्रक्रिया में कोई भी अंतर नहीं है। एस. आबिद हुसैन लिखते हैं "भारत के विभिन्न भाषा भाषी तथा धार्मिक सम्प्रदायों में, जिनमें मुसलमान भी शामिल है, बड़ी मात्रा में वास्तविक सांस्कृतिक एकता तथा संस्कृति के निर्माण करने के लिए संभावनाएँ हैं अर्थात समन्वयात्मक पूर्णता प्रदान करने के लिए वैदिक हिन्दू संस्कृति परम्पराओं बौद्ध, पौराणिक हिन्दू तथा मुगल हिंदुस्तानी संस्कृतियों को सम्मिलित करना होगा।"[6] इसलिए वर्णाश्रम संस्कृति के अधीन दलित संस्कृति की विशिष्टता संस्कृति के सीमित अर्थों अर्थात दार्शनिक चिंतन और वैचारिक उत्कर्ष के द्वारा ही बनती है जैसा कि बताया गया है कि दलित संस्कृति के इतिहास वर्णाश्रम संस्कृति के अधीन बन रही संस्कृति का इतिहास है। इसलिए दलित संस्कृति का निर्माण, सृजन और संघर्ष की प्रक्रिया के साथ-साथ हुआ है।धर्म, संस्कृति, वर्णाश्रम दलित अस्मिता को निर्धारित करने वाले तत्व है। दलित अस्मिता की राजनीति भी वर्णाश्रम दलित समाज की अपनी कोई राजनीति होने का आशय इनके स्वतंत्र राजनैतिक विचार अथवा संगठन से है। हालाँकि उस समय लोकतंत्र, स्वतंत्रता आदि जैसे चीज़ें नहीं थीं। इसलिए उस समय किसी तरह के आंदोलन की कल्पना व्यर्थ ही होगी अर्थात दलितों के द्वारा चलाये गए वर्णाश्रम संस्कृति के विरुद्ध जितने भी आंदोलन होंगे। सभी के धार्मिक एवं सांस्कृतिक आवरण होंगे। ये आंदोलन राजनीतिक आंदोलन के बिना चलाये गए होंगे। इसलिए सफल नहीं हुए। संदर्भ में मायावती ने लिखा है - "राजनैतिक सुधार तथा सामाजिक सुधार एक ही गाड़ी के दो पहियों के समान है, जिनमें से एक के बिना दूसरे पहिये पर गाड़ी नहीं चल सकती दोनों की समान आवश्यकता है" इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं को साकार बनाने के लिए कई हितकारिणी सभाओं और महत्वपूर्ण संगठनों का निर्माण किया जैसे बहिष्कारिणी हितकारिणी सभा, इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी, शेड्यूल कास्ट फेडरेशन आदि। दलितों ने अपनी स्वतंत्र पार्टियाँ तथा संगठन बनाये और उन पार्टियों

का नेतृत्व अपने हाथों में सँभाल कर अपनी दलित अस्मिता को सुरक्षित किया।आरंभ में डॉ. अम्बेडकर के यह विचार थे कि छुआछूत की समस्या हिन्दू धर्म की समस्या है परन्तु बाद में उनका मानना था हिन्दू लोग समाज के कुछ लोगों के साथ । छुआछूत का व्यवहार इसलिए नहीं करते कि वे लोग साफ़-सुथरा नहीं रहते, बल्कि ऐसा इसलिए करते हुए वे अपने धर्म का पालन करते हैं। सन् १९३१ में डॉ. अम्बेडकर ने एक पृथक प्रतिनिधित्व की माँग की। उनके अनुसार अछूतों लिए बहुसंख्यक हिन्दुओं की गुलामी अंग्रेज़ों की गुलामी से अधिक घातक थी। इसलिए डॉ. अम्बेडकर का विचार था कि सम्राज्यवादी गुलामी के साथ-साथ सामाजिक गुलामी के विरुद्ध भी लड़ाई लड़ी जानी चाहिए|प्रेमचंद जब 'ठाकुर का कुआं' की रचना कर रहे थे, तब डॉ.आंबेडकर द्वारा छेड़े दलित अस्मिता आंदोलन ने समाज के चिंतकों के सामने भारतीय समाज व्यवस्था व सांस्कृतिक रिश्तों के बारे में नये दृष्टिकोण से सोचने का आह्वान खड़ा कर दिया था। जिसका कुछ-कुछ प्रभाव प्रेमचंद के साहित्य पर दिखाई देता हैं। छुआछूत की समस्या एक अछूत परिवार के जीवन को किस प्रकार अभाव, अपमान और असुरक्षितता का पर्याय बना देती है। जीवन की सबसे मूलभूत आवश्यकता 'पानी' पर अधिकार न होने और इसे प्राप्त करने के लिए किस प्रकार अपमानजनक तथा भयग्रस्त स्थिति से गुजरना पडता है, इसके यथार्थ चित्रण द्वारा 'ठाकुर का कुआं' कहानी में प्रेमचंद ने अछूत जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्ति दी है। 'ठाकुर का कुआं' से पहले की रचनाओं में जैसे कि 'रंगभूमि' उपन्यास में सूरदास एक चमार नायक है लेकिन, संपूर्ण उपन्यास में कहीं भी अछूत समस्या को अभिव्यक्त नहीं किया गया है। बल्कि मंदिरों में अछूत भी सवर्णों के साथ भजन किर्तन करते हैं और सूरदास के मरने के बाद हुए सहभोज में, एक ही पंगत में ब्राह्मण ठाकुरों के साथ चमार, पासी, डोम सभी अछूत साथ बैठकर भोजन करते है जैसी असंभव घटनाओं का चित्रण है। 'ठाकुर का कुआँ' में गंगी रात के अंधेरे में पानी भरने जाती है| उस वक्त कुप्पी की धुँधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी |गंगी जगत की आड़ में बैठी मौके का इंतज़ार करने लगी| इसी कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है| किसी के लिए कोई रोक टोक नहीं सिर्फ हम बदनसीब नहीं भर सकते| प्रेमचंद ने गंगी के माध्यम से जाति के कारण उत्पन्न विवशता को स्पष्ट रूप से दिखाया है| यही सब सोच रही ती कि तभी वहाँ दो स्त्रियां आती है और ठाकुर के कुएँ पर चढकर पानी खिचने लगती हैं। वे आपस में स्त्री जाति के प्रति पुरूषों के अन्याय पूर्ण रवैये पर गुस्सा व्यक्त कर रहीं थीं। वे दोनों स्त्रियाँ बिना किसी डर या हिचकिचाहट के कुएँ पर चढ़कर पानी खींचने लगती हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि वे सवर्णों को पूरा अधिकार है कि वे बेझिझक, बेरोकटोक बिना किसी डर के कुएँ से पानी भरने के हकदार है। उनकी शिकायत पुरुष प्रधान व्यवस्था से है। जिसमें उनकी स्थिति एक लौंडी अर्थात् दासी से बढ़कर कुछ नहीं। एक स्त्री अपने गुस्से को व्यक्त करती हुई कहती है 'जब ताजा पानी पीने का मन किया तो बस हुकुम चला दिया कि पानी लाओ, जैसे हम लौंडियां ही तो है।' स्त्री इस प्रकार के रवैये से काफी हद तक दुखी है, अपमानित भी महसूस करती है। लेकिन विरोध में कुछ कहने की कोशिश नहीं करती है। 'हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है।' स्त्री द्वारा कहा गया यह कथन संपूर्ण सवर्ण पुरूष वर्ग पर तीखी चोंट है| जाति-प्रथा का विरोध करने पर एक अछूत को मिलने वाले दंड की गंगी को जानकारी हैं। हाथ-पांव तोड़ने से लेकर मृत्युदंड तक की सजा मिल सकती है। उसका यह अपराध दंडनीय है, जबकि पंडित का अपने घर को जुआं घर बनाने, ठाकुर द्वारा गरीब की भेड़ चुराकर खा जाने और

साह द्वारा घी में तेल की मिलावट करने जैसे अपराधों को अपराध नहीं माना जाता। इस कहानी से यह साफ जाहिर होता है कि जाति-प्रथा प्रकृतिक नहीं है इसे शासकों ने शोषितों पर थोपा है| हज़ारों वर्षो स चली आ रही छुआछूत की परंपरा ने न केवल अछूतों को उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित किया है बल्कि समाज में इंसान के स्तर से भी नीचे गिरा दिया है| साहित्य सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम. है, जो सामाजिक समानता स्थापना के संघर्षशील आंदोलन का रूप ले सकता है। लेकिन जातिभेद निर्मूलन के क्रांतिकारी दर्शन के अभाव में एक संवेदनशील कहानी विचार के स्तर पर बदलाव लाने में सफल नहीं हो सकी। गंगी का कुएं की जगत से कूदकर भागना, संघर्ष करने के बजाय अपनी हालत को ही नियति मान लेना और अपने हक के लिए लड़ने की उम्मीद छोड़ देना यह सब बातें उसकी यथास्थिति में विश्वास और उसी की ओर लौटने का संकेत देती है। जोखू का वही बदबू करता हुआ पानी पीना भी इसी मूढ़ता, जड़ता और पलायनवादी दृष्टि को स्पष्ट करता है|

निष्कर्ष

प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआँ 1932 में प्रकाशित हुई थी|यह एक ऐसे समाज की बात करती है जिसमें उच्च जातियाँ अपराधों से दूर हो जाती हैं, जबकि निचली जातियाँ जीवित रहने के लिए संघर्ष करती हैं|यह दलित महिलाओं की स्थिति पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जिनके साथ तीन अक्षों - लिंग, जाति और वर्ग पर भेदभाव किया जाता है ठाकुर का कुआँ" की नायिका गंगी अपने बीमार पति को कुएँ से पानी नहीं पिला सकती, क्योंकि वह एक मरे हुए जानवर द्वारा खराब कर दिया गया है। वह एक दलित हैं, इसलिए उन्हें पास के ठाकुर के कुएं से साफ पानी लाने की मनाही है| भारतीय जनसंख्या का साठ प्रतिशत हिस्सा गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले दलित समुदाय है|आजादी के पच्हत्तर साल बाद भी वर्ण-व्यवस्था ने समाज मे असमानता और श्रेणीनुमा ढांचा पैदा करके दलितों को सभी सुख-सुविधाओं से वंचित कर रखा है।कथित ऊँची जाति के कुओं से ये पानी नहीं ले सकते। इनका अपना कुआँ हो नहीं सकता कथित ऊँची जाति की दया पर निर्भर रहकर पानी के लिए तरसना ही इनके जीवन की त्रासदी है। घंटो याचना करने पर किसी सवर्ण का मन पसीजा तो दो चार बाल्टियों से मटके भर देंगे, वह भी हजार गलियाँ देकर।इस पर भी अछूतों को गाँव पंचायतों द्वारा अपमानित, उत्पीड़ित किया जाता है या इन्हें एहसान जताते हुए वर्चस्व का विरोध करने अथवा इस व्यवस्था को तोड़ने पर मार दिया जाता है। 'ठाकुर का कुआँ' दलितों की इसी गंभीर समस्या को उजागर कतरा है|यह समस्या आज भी हमारे समाज में जस की तस बनी हुई है |

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद की कहानियाँ- एम.एच.डी-10- ईग्नू, पाठ्य पुस्तक
2. हिंदी कहानी विविधा- डॉ. विमल खांडेकर, डॉ. राम विनय शर्मा
3. 3.मानसरोवर - भाग 1-पृष्ठ- 104,105
4. साहित्य कुंज ई-पत्रिका- आलेख- दलित अस्मिता पर अम्बेडकर चिंतन का प्रभाव विश्लेषणात्मक अध्ययन- कीर्ति भारद्वाज

5. भारत की राष्ट्रीय संस्कृति- एस आबिद हुसैन
6. बहुजन मूवमेंट का सफरनामा- कुमारी मायावती